IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आम-जन का कवि:नागार्जुन

प्रियंका टोप्पो

दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

गया

नागार्जुन, अपने समय का "सबसे बड़ा, सुलझा हुआ, सबसे आधुनिक; सबसे जागरूक कवि"।1 लोक जन-जीवन के रूप-रंग, गंध, सुख-दुख, संघर्ष को वाणी देता हुआ कवि, नागार्जुन। नागार्जुन के समकालीन कवि त्रिलोचन उनकी कविता के विषय में लिखते हैं- "नागार्जुन का स्वर प्रबुद्ध जनता का स्वर है"।2

जिस प्रकार कविता के व्यापक स्वरूप को किसी विशिष्ट परिभाषा में बाँधना बहुत कठिन ही नहीं लगभग असंभव है उसी प्रकार नागार्जुन के व्यापक काव्य-क्षेत्र को निश्चित प्रवृतियों में बाँधना आसान नहीं है। नागार्जुन की कविता को उसकी व्यापकता में ही देखा समझा जा सकता है। क्योंकि नागार्जुन किसी साँचें में पूरी तरह से फिट नहीं होतें हैं। साफ कहें तो तो वे हिन्दी आलोचना का अतिक्रमण करते हैं। वे ठीक कबीर की ही तरह आलोचकों के सभी टूल्स को निरस्त करते; आलोचना के तमाम परिमाणों-परिमापों से बाहर– एक मिसफिट कवि हैं। नागार्जुन को उनकी कविता की गतिकी से बाहर किन्हीं रूढ़ अर्थों में नहीं देखा जा सकता है। नागार्जुन को समझने के लिए आत्मपरक्ता नितांत आवश्य है, उन्हें वस्तुपरक होकर नहीं समझा जा सकता है।

किसी भी कवि को समझने के लिये हमें उसकी कविता के साथ-साथ पूरी रचना-प्रक्रिया को समझना होता है। नागार्जुन की रचना-प्रक्रिया का केंद्रीय बिंदु उनकी प्रतिबद्धता है। यह प्रतिबद्धता आसान नहीं है। ऐसे समय में जब प्रतिबद्धता स्वयं के संकुंचित दायरे तक ही सिमट कर रह गई; पूरे बहुजन समाज के प्रति प्रतिबद्ध होना एक कठिन कार्य है-"प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ–/बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त"।3 यह कार्य कठिन इसलिए भी है क्योंकि इस प्रतिबद्धता का आरंभ 'स्व' के निषेध से आरंभ होता है। कवि तमाम खतरों के बावजूद अपनी पूरी प्रतिबद्धता के साथ अविवेकी भीड़ के खिलाफ खड़ा है। कवि कहता है-

"संकुचित '□□□' की आपाधापी के निषेधार्थ...

अविवेकी भीड़ की '□□□□□□-□□□□' के खिलाफ़...

अंध-बधिर '□□□□□□□□□□' को सही राह बतलाने के लिए...

अपने आप को भी '□□□□□□□' से बारंबार उबारने की खातिर...

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, शतधा प्रतिबद्ध हूँ!"4

नागार्जुन के यहाँ आलोचना आत्मालोचना से अलग नहीं है। इसीलिए यहाँ वह अपने आप को भी 'व्यामोह' से उबारने पर जोड़ देते हैं। नागार्जुन की प्रस्तुत कविता के विषय में नामवर सिंह कहते हैं-"कहने की आवश्यकता नहीं कि नागार्जुन के ये विचार आचार से पुष्ट हैं, इसलिए इनमें सच्चाई की ताकत है।"5

आधुनिक कवियों में मुक्तिबोध के साथ नागार्जुन हीं स्वयं का बाह्यीकरण और बाह्य का स्वकीयकरण करने में सबसे ज्यादा सक्षम हो सके। नागार्जुन के पुत्र शोभाकांत अपनी पुस्तक "नागार्जुन:मेरे बाबूजी" में लिखते हैं- "अपने समकालीनों में बाबूजी उन थोड़े लोगों में हैं जिन्होंने देश की बहुसंख्यक विपन्न लोगों के साथ विपन्नता को अंगीकार किया है। साथ-साथ परिवार के लोगों को यह भी बताया कि मुट्ठी भर लोगों के साथ किसी भी तरह नहीं रहा जा सकता.."।6

नागार्जुन की कविता बहुजन क्रांति का बाहरी आकलन-अवलोकन नहीं करती है बल्कि वह क्रांति के साथ कदम से कदम मिलकर चलती है। बहुजन समाज के प्रति नागार्जुन की प्रतिबद्धता इतनी स्पष्ट है कि वह बहुजन क्रांति के निमित्त अपनी जान की बाजी तक लगाने के लिए तैयार हैं- "भूमि पाटते चलना/हम तो, भैया, लगे किनारे .../नहीं, नहीं, ये प्राण हमारे/देंगे, देंगे, देंगे, देंगे, देंगे/संग तुम्हारे, साथ तुम्हारे"7

किसी भी कवि को उसकी गतिशीलता बड़ा बनाती है। जैसे कबीर, निराला, त्रिलोचन, शमशेर, मुक्तिबोध आदि। और यह गतिशीलता नागार्जुन के यहाँ बिल्कुल सधी हुई है। नागार्जुन अपने काल की मूल गतिमान शक्तियों के सच्चे पारखी हैं। उनकी कविता रूढ़ नहीं होती है; गतिशील रहती है और अपने समय और समाज को समग्र रूप में प्रतिबिंबित करती है। नागार्जुन की यह काल दर्शिता उनकी पूरी काव्य-यात्रा में देखने को मिलती है। नागार्जुन जब लिखना शुरू कर रहे थे, वह समय औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ मुक्ति-संग्राम का समय था। आने वाले दिनों के, नये समाज के सपने देखे जा रहे थे। हमारा कवि भी "नवयुग के आरंभ" के सपने देखता है। वह सहयोग, प्रगति और समता की बात करता है। वह अपील करता है कि इस नवयुग का आरंभ गाँवों से होगा, जहाँ भारत की आधिकांश आबादी रहती है। कवि कहता है-"हो बुलंद सहयोग, प्रगति, समता के नारे/नवयुग का आरम्भ करें ये गाँव हमारे"। 8 इसीलिए बच्चन सिंह नागार्जुन के विषय में लिखते हैं- "वह कोटि-कोटि जन का प्रतिनिधि कवि है।"9

"नवयुग के आरंभ" के सपने को साकार करने के लिए कुर्बानियों का दौर चल रहा था। हमारा कवि भी उस सपने, उस आजादी को पाने के लिये कोई भी कुर्बानी देने के लिये तैयार था। 20 मई 1945 को लोकयुद्ध पत्रिका के अंक में नागार्जुन द्वारा "छापामारों का गीत" नाम से अनुवादित किसी युगोस्लाव कवि की एक कविता छपती है। कविता की पंक्तियाँ हैं–

"इस दुनिया की सभी वस्तुओं से बढ़कर/हमको है आजादी प्यारी

कितनी ही महंगी हो, कीमत/हम चुकाएंगे"10

आजादी के दिन यानी 15 अगस्त 1947 के बाद यह स्वप्न तब धीरे-धीरे टूटने लगते हैं जब अंग्रेजों की जगह भारतीय शासक भी आम जनता पर उसी तरह शासन करने लगते हैं जैसे आम जनता पूर्व में शासित होती आयी थी। काल की इस गति को हिंदी का कोई कवि सबसे पहले पकड़ता है तो वह नागार्जुन हैं। आजादी के एक साल भी पूरे नहीं होते है और अप्रेल 1948 में नागार्जुन "लाल भवानी" नाम से कविता लिखते हैं और सत्ता के शोषण-दमन का विरोध करते हैं। वह इस आजादी को कागज की आजादी बतलाते हैं-"कागज़ की आजादी मिलती ले लो दो-दो आने में"11 और लाल सबेरा यानी किसान मजदूर के शासन की आस लगाते हैं जिसकी एक झलक उन्हें तेलंगाना के किसान आंदोलन में देखने को मिलती है। नागार्जुन लिखते हैं– "होशियार, कुछ देर नहीं है लाल सबेरा आने में/लाल भवानी प्रकट हुई है सुना की तेलंगाने में!"12 नागार्जुन का यह विद्रोही तेवर पूरी समाज व्यवस्था को किसानों-मजदूरों, शोषितों-वंचितों के लिए ध्वस्त कर देना चाहता है और एक नया समतामूलक समाज रचना चाहता है। यह नागार्जुन को अन्य लेखकों से अलग करती है। बिना किसी संकोच के कहा जा सकता है कि "ये कोरे लेखक नहीं हैं।" 13

नागार्जुन की कविता आम जन की कविता है इसीलिए वे कलावादियों के "कला कला के लिए" के नारे का विरोध करते हैं। उनके लिए बिना किसी स्पष्ट जनपक्षधरता के लिए कला का कोई अर्थ नहीं है। उनके लिए कला साध्य नहीं बल्कि साधन है आम जन की मुक्ति के संघर्ष को तेज करने का। इसीलिए नागार्जुन भाववाद के दलदल में पूरी तरह से डूबी काव्य कला का उद्धार करने की बात करते हैं। वह लिखते हैं-

"भावों की दलदल में आकंठमग्न काव्य कला

त्राहि त्राहि कर रही, उद्धार करो उसका"14

नागार्जुन की कविताओं में घोर निराशा के क्षणों में भी एक आशा देखने को मिलती है। आशाहीन समय में भी आशा को जीवित रखना काफी कठिन कार्य है। लेकिन इस कठिन कार्य को नागार्जुन न बहुत खूबी से साधा है। यह आशा कवि की जीवन के प्रति गहरी जिजीविषा की बदौलत ही संभव हो पाया है। उनकी कई कविताएँ ऐसी हैं जो हमारे सामने क्रूर-दमनकारी-शोषणकारी यथार्थ का चित्रण करते हुए हमें निराशा की ओर लेकर जाती हैं क्योंकि हमारा यथार्थ

निराशापूर्ण है लेकिन उसी निराशा, उसी अंधकार से रौशनी भी फूटती दिखती है। आप शाषन की बंदूक कविता को ही लीजिये। कविता की पहली ही पंक्तियाँ हमारे सामने कैसा भयावह बिम्ब रचती है–"नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक"15; इतनी विराट की कंकालों तक की हुक चाप दी गई है–"खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक"।16 शासन के शोषण और दमन का घोर अंधकार। शासन का गुमान ऐसा जैसा कभी हिटलर का रहा था। इस गुमान शासन कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं। जहाँ सत्य स्वयं घायल अवस्था में हो और अहिंसा का नारा पूरी तरह से भूल दिया गया। शासन का दमन अपनी चरम अवस्था पर हो और जहाँ-तहाँ शासन की बंदूक दगने लगी हो। लेकिन कविता खत्म होती है इस अंधकार को चीरती हुई रौशनी से, एक आशा के क्षण से-

"जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक

बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक"17

उनकी एक दूसरी कविता हरिजन गाथा। यह कविता बिहार के बेलछी गाँव में हुए सवर्णों के द्वारा हरिजनों के सामूहिक हत्या का त्रासद चित्रण करते हुए लिखी गई है। कविता के पहले भाग में कवि अपनी पूरी संवेदना के साथ निर्मम हत्याकांड का त्रासद का चित्रण करता है। लेकिन कविता केवल यथार्थ का चित्रण भर करके नहीं रह जाती। बल्कि अपने दूसरे भाग में उस निर्मम यथार्थ का पूरजोर विरोध करती है। कविता के दूसरे भाग में एक बच्चे का जन्म होता है। यह बच्चा जिसके विषय में कवि कहता है कि–

"ऐसा नवजातक

न तो देखा था, न सुना ही था आज तक!

पैदा हुआ है दस रोज़ पहले अपनी बिरादरी में"18

यह बच्चा, जिसके जन्म लेने से पहले ही उसके पिता को भी उस अग्नि कुंड में झोंक दिया गया था, कौन है। यह वही आशा की किरण है। जिसके विषय में कवि कहता है कि यह अछूत शिशु सचमुच की सम्पूर्ण क्रांति लायेगा और हमारा उद्धार करेगा। कवि का दिल और भी बहुत कुछ कह रहा है– "दिल ने कहा-अरे यह बालक/निम्न वर्ग का नायक होगा"19

शमशेर बहादुर सिंह नागार्जुन की कविताओं के विषय में लिखते हैं कि ये कविताएँ "जिनमें शासन और समाज का भ्रष्टाचार और पाखंड और पूंजीवादी तत्वों की बर्बर हिंसात्मक लिप्सा अपने नग्न रूप में सामने आती है,--उनकी कविताएँ संघर्षरत साहसी युवकों और शोषित श्रमिकवीरों की दुनिया में हमें ले जाती हैं"।20 इस प्रकार नागार्जुन के विषय में कुछ ठीक-ठीक कहने में उनकी ही पंक्तियाँ याद आती हैं। उन्होंने अपने विषय में ठीक ही कहा था-"जन-जन में जो ऊर्जा भर दे, मैं उदगाता हूँ उस रवि का"।21 यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि नागार्जुन सही अर्थों में आजाद भारत के अगवा जन कवि हैं।

संदर्भ सूची-

1. कुछ और गद्य रचनाएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या- 18
2. नागार्जुन का स्वर प्रबुद्ध जनता का स्वर है, त्रिलोचन, आजकल पत्रिका, अंक:2, जून 2011, पृष्ठ संख्या- 4
3. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या-15
4. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या-15
5. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या-8
6. नागार्जुन:मेरे बाबूजी, शोभाकांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या- 125
7. कविता कोश https://shorturl.at/tuFH8
8. नागार्जुन रचनावली 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, पृष्ठ संख्या-83
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2016, पृष्ठ संख्या- 249
10. नागार्जुन रचनावली 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, पृष्ठ संख्या- 65
11. नागार्जुन रचनावली 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, पृष्ठ संख्या- 100
12. नागार्जुन रचनावली 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, पृष्ठ संख्या- 100
13. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2016, पृष्ठ संख्या- 248
14. उद्धृत, समकालीन हिन्दी कविता, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2018, पृष्ठ संख्या-46
15. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या- 104
16. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या- 104
17. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या- 105
18. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या- 138
19. प्रतिनिधि कविताएँ, नागार्जुन, संपादक-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेइसवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या- 142
20. कुछ और गद्य रचनाएँ, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या- 18
21. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2016, पृष्ठ संख्या- 251